International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 7 July 2022, pp: 937-940 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

# शोध शीर्षक: आज़ादी के अमृत महोत्सव पर स्वतंत्र भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति का समग्र अध्ययन।

शोधार्थी भावना कुमारी
इतिहास विभाग
बी एन एम यू , मधेपुरा, बिहार

Submitted: 10-07-2022 Revised: 17-07-2022 Accepted: 21-07-2022

**सार**

हमारे भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति देश की सामाजिक , आर्थिक एवं मानसिक स्थिति को दर्शाती है। शास्त्रों में नारी को अध्यात्म का संकेतक माना गया है। मनुस्मृति में यह भी उल्लेख किया गया है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता अर्थात जिस काल में नारियों की पूजा होती है उस काल में दिव्य गुण एवं उन्नति होती है। कई साक्ष्यों के अनुसार फिर भी प्राचीन काल में नारियों को अधिकारों एवं समानता से वंचित रखा गया था। दहेज, सती प्रथा , बाल विवाह एवं कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियां समाज में मौजूद थी हमारे स्वतंत्र भारत में महिलाएं सशक्त हैं। महिलाएं हर क्षेत्रों में अपनी स्थान बना रही हैं। आजाद भारत में लैंगिक समानता , शैक्षिक, स्थिति पर ध्यान दिया जा रहा है।भारत में विभिन्न कार्यालयों संगठन में उच्च पदों पर अपना अधिकार प्राप्त करने हेतु महिलाओं की संख्या में वृद्धि देखी गई है। जिसका उदाहरण इंदिरा गांधी , विजय लक्ष्मी पंडित जी , किरण बेदी , कल्पना चावला ,शायना नेहवाल, जैसी नारियां उदाहरण के रूप में है। स्वतंत्र भारत में महिलाएं की स्थिति में सुधार के हेतु हमारी सरकार ने कई प्रकार की योजना बनाई है, जिसमें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ ,नारी शक्ति केंद, नारी शक्ति पुरस्कार प्रमुख हैं। महिलाएं की स्थिति में सुधार को दर्शाने के लिए कई फ़िल्में स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है कैसे पारंपरिक समाज से आधुनिक समाज ने लैंगिक भेदभाव के मुद्दे में संशोधन किया है। आधुनिक भारत को आकार देने में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इस शोध पत्र का उद्देश्य स्वतंत्र भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार पर प्रकाश डालना है। महिलाओं का देश के प्रति योगदान का वर्णन करना है।

**मुख्य बिंदु**

महिला शिक्षा ,लैंगिक समानता , नौकरी, राजनीतिक योगदान।

## परिचय

**भारतीय पारंपरिक** में महिलाएं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही हैं। इसमें हर युग में परिवर्तन होते रहे हैं। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक प्रकार के उतार चढाव आते रहे हैं तथा उनके अधिकारों में तदनुरूप बदलाव भी होते रहे हैं। वैदिक युग में स्त्रियां की स्थिति सुदृढ़ थी , परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था। उनको शिक्षा का अधिकार प्राप्त था तथा सम्पत्ति में उनको बराबरी का हक था । सभा व समितियों में स्वतंत्रतापूर्वक भाग लेती थी। तथापि ऋग्वेद में कुछ ऐसी उक्तियों भी है जो

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 7 July 2022, pp: 937-940 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

महिलाओं के विरोध में दिखाई पड़ती है। मैत्रेयीसंहिता में महिलाएं को झूठ का अवतार कहा जाता था। ऋग्वेद का कथन है कि स्त्रियों के साथ कोई मित्रता नहीं है , उनके हृदय भेड़ियों के हृदय है। ऋग्वेद के अन्य कथन में स्त्रियों को दास की सेना का अस्त्र शस्त्र कहा गया है। स्पष्ट है कि वैदिक काल में भी कहीं न कही महिलाएं नीची दृष्टि से देखी जाती थी। फिर भी हिन्दू जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह रूप से आदर और प्रतिष्ठित थी। शिक्षा , धर्म, व्यक्तित्व और सामाजिक विकास में उसका महान योगदान था। साक्ष्यों के अनुसार स्त्री की अवनति उत्तर वैदिक काल से शुरू हुई । उनपर अनेक प्रकार के अंकुश लगाए जाने लगे। मध्यकाल में इनकी स्थिति और भी अधिक दयनीय हो गयी। पर्दा प्रथा इस सीमा तक बढ़ गयी कि स्त्रियों के लिए कठोर एकांत नियम बना दिए गए। शिक्षण की सुविधा पूर्ण रूप से समाप्त हो गई। भक्ति आंदोलन के कुछ ही समय बाद सिक्खों के पहले गुरु , गुरु नानक ने भी पुरुष और महिलाओं के बीच समानता के संदेश को प्रचारित किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक स्त्रियों की निम्न दशा के प्रमुख कारण अशिक्षा , अर्थिक निर्भरता, धार्मिक निषेध, जाति बंधन, स्त्री नेतृत्व का अभाव तथा पुरुषों का उनके प्रति अनुचित दृष्टि आदि थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से सरकारद्वारा उनकी अर्थिक सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार लाने तथा उन्हें विकास की मुख्य धारा में समाहित करने हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाओं और विकासात्मक कार्यक्रम का संचालन किया गया है। महिलाओं को विकास की अखिल धारा में प्रवाहित करने , शिक्षा के समुचित अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें अपने सोच में मूलभूत परिवर्तन लाने , अर्थिक गतिविधियों में उनकी अभिरुचि उत्पन्न कर उन्हें अर्थिक सामाजिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन की और अग्रसारित करने जैसे अहम उद्देश्य की पूर्ति हेतु पिछले कुछ दशकों में विशेष प्रयास किए गए हैं। ।

भारतीयसमाजमेंमहिलाओंकीस्थितिमेंसमयसमयपरपरिवर्तनहोतारहताहै।मनुस्मृतिकेअनुसारकहागयाहैकियत्रनार्यस्तुपूज्यन्तेरमन्तेतत्रदेवताअर्थातजहांनारीकीपूजाहोतीहैवहांदिव्यगुणमौजूदहोताहैफिरभीनारीकोअबलासमझाजाताथा।

स्वतंत्रभारतमेंमहिलाएंसशक्तहोरहीहैं।महिलाएंकोसमाननताकाअधिकारप्राप्तहुआहै।महिलाओंकोहरक्षेत्रमेंअवसरप्रदानकीजारहीचाहेराजनीतिहो,

शिक्षायानौकरीमहिलाओंकोसशक्तकरनेकेलिएअथकप्रयासकियाजारहाहै।विश्वविद्यालयशिक्षाआयोग (1948)

केद्वारामहिलाशिक्षापरविशेषबलदियागयाहैचूंकिमहिलाकेशिक्षापरदेशकाविकासनिर्भरकरताहै।सन(1963)मेंपंडितजवाहरलालनेहरुनेवनस्थलीविद्यापीठमेंभाषणदेतेहुएकहाथाकिपुरुषकीशिक्षाकेवलएकव्यक्तिकीशिक्षाहैपरंतुएकस्त्रीकीशिक्षासंपूर्णपरिवारकीशिक्षाहै।अर्थातस्त्रीशिक्षापरउन्होंनेबलदिया।उन्होंनेस्त्रीशिक्षाकोमहत्पूर्णकहाहै।

स्वतंत्रभारतमेंअगरमहिलाएंश्रमिकदरदेखाजाएतोएनएसओरिपोर्टद्वाराकिएगएसर्वेक्षणकेअनुसार2009-10 एवं 2011 -12 केदौरानदेशमेंसामान्यस्थितिकेआधारपरअनुमानितमहिलाश्रमिकजनसंख्याअनुपातक्रमशः 26 .6% एवं 23.7% है।

श्रमब्यूरोद्वारावर्ष2012 से 2013, 2013 से 2014 एवं 2015 -2016 मेंकिएगएवार्षिकरोजगार-बेरोजगारी(ईयूएस)सर्वेक्षणकेअंतिमतीसरेदौरकेअनुसार, समान्यस्थितिकेआधारपर 15 वर्षऔरउससेअधिकआयुकीमहिलाकेलिएश्रमिकजनसंख्याअनुपातक्रमशः 25 .0%, 29.6% और 25 .8% है।राज्य/संघराज्यक्षेत्र-वारविवरण:-

सरकारनेमहिलारोजगारसहित,

रोजगारबढ़ानेकेलिएकईकदमउठाएहैं,

जैसेअर्थव्यवस्थाकेनिजीक्षेत्रकोप्रोत्साहितकरना,

पर्याप्तनिवेशवालीविभिन्नपरियोजनाओंपरध्यानकेंद्रितकरनाएवंसूक्ष्मलघुऔरमध्यमउद्यममंत्रालयद्वारासंचालितप्रधानमंत्रीरोजगारसृजनकार्यक्रमजैसीयोजनाओंपरसार्वजनिकव्ययबढ़ाना।महात्मागाँधीराष्ट्रीयग्रामीणरोजगारगारंटीयोजनाएवंपंडितदीनदयालउपाध्यायग्रामीण

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 7 July 2022, pp: 937-940 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

कोशलयोजना,
ग्रामीणविकासमंत्रालयद्वारासंचालितयोजनाऔरदीनद यालअंत्योदययोजनाराष्ट्रीयशहरीआजीविकामिशनआ वासऔरशहरीगरीबीउपशमनमंत्रालयद्वारासंचालितहै। प्रधानमंत्रीमुद्रायोजनाकेतहतमहिलाकर्जदारोंको0.25% कीविशेषछूटदीजातीहै।मुद्रायोजनाकेतहतदिएगएलगभ ग 75% उधार 31 मार्च, 2018 तककुल12.27 करोड़स्वीकृतउधारमेंse9.02
करोड़महिलाउद्मियोकोदिएगएहैं।श्रमऔररोजगारमंत्रालयनेमहिलाश्रमभागीदारीदरकोबढ़ानेकेलिएविभिन्नकदम उठाकरइसमुद्देकोलक्षितकियाहै,
जिसमेंमातृत्वलाभसंशोधनअधिनियम 2017 काअधिनियमशामिलहैजोभुगतानमातृत्वअवकाशको 12 सप्ताहसेबढ़ाकर26 सप्ताहकरनेकाप्रावधानकरताहै। 50
याअधिककर्मचारीवालेप्रतिष्ठानोंमेंअनिवार्यक्रेचसुविधा रातकीपालीमेंपर्याप्तसुरक्षाउपायोंकेसाथमहिलाकामगा रोंकोअनुमतिदेनेकेलिएकारखानाअधिनियम 1948 केतहतराज्योंकोपरामर्शजारीकरना।समानपारिश्रमिकअ धिनियम 1976
बिनाकिसीभेदभावकेसमानकार्ययासमानप्रकृतिकेकार्यके लियेपुरुषऔरमहिलाश्रमिकसमानपारिश्रमिककेभुगतान काप्रावधानकरताहै।
महिलाओंकीस्थितिमेंसुधारकोदर्शानेकेलिएकईफ़िल्मेंस्प ष्टरूपसेव्यक्तकरतीहैकिकैसेपारंपरिकआधुनिकसंस्कृ तिमेंबदलावनेलैंगिकभेदभावकेमुद्देपरसंशोधनकियाहै।दी पामेहताकी'वाटर'रोनीयूकीदफैंटमलवरहै'।येसमस्तफ़ि ल्मेंमहिलानायककीलड़ाईउनकेधीरजऔरपुरानीसंस्कृति याधर्मपरकाबुपानेकेलिएप्रदर्शितकरतीहै।जोउनकीस्थि तिमेंसुधारलानेमेंरूकावटथी।'इंग्लिशविगतिशएकभारती यफिल्महैजोकुशलतापूर्वकदर्शातीहै,
किकैसेएकगृहणीएकपुरुषकेमददकेबिनाएकविदेशीदेशों मेंस्वतंत्ररूपसेअपनाजीवनयापनकरसकतीहैं।अर्थातवि भिन्नसाक्ष्योंसेज्ञातहोताहैकिआधुनिकभारतकोएकस्वरू पदेनेमेंमहिलाओंकायोगदानमहत्वपूर्णरहाहै।उपरोक्तस भीतथ्योंकोको**विचार**करतेहुएयहकहनाअनुचितनहींहोगा किहमारेदेशकाविकासमहिलाओंकेविकासपरनिर्भरकरता है।अगरराजनीतिकक्षेत्रोंमेंमहिलाएंकीस्थितिदेखाजाएतो वर्तमानसरकारकेनेतृत्वमें 2014 मेंकुलनौमहिलासांसदोंकोकैबिनेटऔरराज्यमंत्रीबनायाग याथा। 16 वींलोकसभामें61 महिलाउम्मीदवारनेस्थानलिया।लोकसभाकेकुलसदस्य 543 हैजिसमेंमहिलासदस्यकीसंख्या58 सेअधिकहै (2009)।पीआरएसलेजिसलेटीवरिसर्चकेअनुसार"यहदेश केइतिहासमेंलोकसभामेंपहुचनेवालीमहिलाओंकीसबसेअ धिकसंख्याहै।अगरशिक्षाकीक्षेत्रोंमेंमहिलाकीस्थितिदेखा जाएतो2022 मेंभारतमेंमहिलाएंकीसाक्षरतादर 70 .3 % है।वहींनौकरीमेंमहिलाएंकीस्थितिदेखाजाएतो 2019 मेंमहिलाश्रमदरविश्वबैंकद्वाराअनुमानित 20.3 % थी।
विवेकानंदकेअनुसारकोईराष्ट्रतबतकअपनापूर्णविकासन हींकरसकताजबतककिउसकाप्रत्येकनागरिकराष्ट्रकेवि कासकाभागीदारनहींबनता।
अतःस्त्रीअच्छेसमाजऔरअच्छेराष्ट्रकास्त्रोतहोतीहैं।वि द्यासेव्यक्तिसंकीर्णमानसिकताऔररूढ़वादिताकीजंजी रोंकोतोड़सकताहै।
इसशोधपत्रकाउद्देश्यस्वतंत्रभारतमेंमहिलाएंकीस्थितिमें सुधारपरप्रकाशडालनाहैतथामहिलाओंकादेशकेप्रतियोग दानकावर्णनकरनाहै।
मुख्यबिंदु

- महिलाशिक्षा
- लैंगिकसमानता
- नौकरी
- राजनीतिकक्षेत्रोंमेंमहिलाओंकायोगदान

शोधपद्धति
यहशोधपत्रद्वितीयकस्त्रोतपरआधारितहैजिसमेंवर्णना त्मकअध्ययनकोशामिलकियागयाहैतथाद्वितीयकस्त्रो तकेअंतर्गतजर्नल, पत्रिका, किताबें, मूवी, रिपोर्टकोशामिलकियागयाहै।

## निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान सरकार और समाज ने काफी हद तुक स्थिति में सुधार लाने का प्रयास कर रही हैं हालांकि अभी भी पूरी तरह से महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 7 July 2022, pp: 937-940 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

हुआ है परंतु धीरे धीरे वह विकास के तरफ उन्मुख है। वर्तमान समाज में हर क्षेत्रों में महिलाएं को सशक्त करने की प्रयास किया जा रहा है चाहे शिक्षा हो या राजनीतिक , नौकरी हो या खेलकूद हर क्षेत्रों में सरकार महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए अथक प्रयास कर रही हैं।

**सुझाव**

- महिलाओं की शिक्षा के लिए सरकार को एक ऐसी योजना बनानी चाहिए जिसमें जो अधिक उम्र की महिला हैं उसके लिए एक ऐसा विद्यालय का प्रबंध करना चाहिए जिससे हर महिला शिक्षित हो पाए ।
- महिलाओं के लिए एक एसा शिक्षक हो जो उसे कम्प्यूटर का ज्ञान दिला सके जिससे उसमे जागरूकता आ सके
- मुफ्त की शिक्षा का प्रावधान करना चाहिए जिससे गरीब महिला भी शिक्षा ग्रहण कर पाए।
- महिलाओं के लिए रात्रि पाठशाला का प्रबंध करना चाहिए चूंकि महिला जो गृहणी है वो दिन में घर के कार्य में व्यस्त होती है इसलिए उनके लिए ऐसे विद्यालय की आवश्यकता है।

## सन्दर्भ

[1]. गोविंद केलकर : इम्पैक्ट ऑफ ग्रीन रिवोल्यूशन ऑन वीमेंस वर्क पार्टीसीपेशन एंड स्कैन, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च , नई दिल्ली, 1881

[2]. राम आहूजा : भारतीय समाज , रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2002

[3]. मीनाक्षी मुखर्जी : रियलिटी एंड रियलिजम ,इंडियन वुमन इज़ प्रोटेंगनिस्टेटस इन फॉर नईटीथ सेंचुरी नॉवेल , इकोनॉमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 1884

[4]. मैत्रयी कृष्न राज : रिपोर्ट ऑन वर्किंग वुमन साइंटिस्ट इन बाम्बे एस एन डी टी. वीमेंस यूनिवर्सिटी रिसर्च यूनिट ऑन वीमेंस स्टडीज, बंबई, 1971

[5]. प्रज्ञा शर्मा :"वुमन इन इंडियन सोसाईटी" , जयपुर, पॉइंटर पब्लिशर ,2011

[6]. सुधीर वर्मा :वीमेंस स्ट्रगल फॉर पोलिटिक स्पेस बी जयपुर रावत पब्लिकेशन, 1997

[7]. पी एन पूरी चोपड़ा , बी पी एन दास एम एन: भारत का सामाजिक संस्कृतिक और अर्थिक इतिहास ,दिल्ली मेक मिलन इन्डिया लिमिटेड, 2005

[8]. गोपीनाथ शर्मा : "राजस्थान का संस्कृतिक इतिहास जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2008

[9]. काल् राम शर्मा : "उन्नीसवीं सदी के राजस्थान का सामाजिक और आर्थिक जीवन "जयपुर , राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2004

[10]. एम ए अंसारी : "महिला और मानव अधिकार जयपुर ज्योति प्रकाशन, 2010